जापान के प्रधानमंत्री द्वारा आयोजित सम्मान भोज में प्रधानमंत्री का भाषण

15 दिसम्बर 2006
टोक्यो

इस देश में हमारा जो गर्मजोशी से स्वागत और सम्मान हुआ है, उसके लिए मैं जापान की सरकार और लोगों को धन्यवाद देना चाहूँगा।

मैं कई बार जापान आ चुका हूँ, लेकिन प्रधानमंत्री के रूप में यह मेरी पहली यात्रा है। मैं आपके इतिहास में एक ऐसे महत्वपूर्ण अवसर पर यहां आया हूँ, जब नई पीढ़ी आपके देश का नेतृत्व संभाल रही है। मुझे यहां के लोगों में जापान के भविष्य के लिए आशा की भावना नजर आ रही है।

भारत और जापान की साझी सभ्यतापूर्ण विरासत है और दोनों की एशिया में साझी पहचान है। दोनों देशों के दीर्घकालिक तथा मिले-जुले राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक हित हैं। दोनों देश लोकतंत्र, मानव अधिकारों, कानून के शासन तथा मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था के प्रति साझा रूप से प्रतिबद्ध हैं। इस प्रकार जापान और भारत एक दूसरे की प्रगति और समृद्धि में परस्पर हितों के साथ स्वाभाविक साझीदार हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, मेरा मानना है कि दोनों देशों में भारत और जापान के बीच मजबूत तथा सतत साझीदारी के पक्ष में व्यापक राजनीतिक आम सहमति है।

हम जापान द्वारा भारत को उपलब्ध कराई गई विकास सहायता के लिए उसके आभारी हैं। लेकिन, व्यापार, प्रौद्योगिकी और निवेश के प्रवाह को बढ़ाने की ऐसी व्यापक क्षमताएं अभी भी मौजूद हैं, जिनकों तलाशा नही गया है। मेरा मानना है कि मेरी इस जापान यात्रा से दोनों देशों के बीच सहयोग के नए रास्ते खुलेंगे।

मैं अन्त में रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविता की दो लाइनों के साथ आप सभी को फिर से धन्यवाद देता हूँ। ये लाइनें हैं-

एक बार हमने सपने में देखा था कि हम अजनबी हैं,
जब आँख खुली तो पाया कि हम एक दूसरे के आगोश में हैं।

महामहिम, देवियो और सज्जनो,

आइए, जापान के प्रधानमंत्री तथा श्रीमती आबे के अच्छे स्वास्थ्य की कामना, दोनों देशों के लोगों की समृद्धि और प्रगति की कामना और हमारी साझेदारी की कामना के साथ हम इस सम्मान भोज मे शामिल हों।

धन्यवाद।

*****